

प्रेस नोट

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू), बीकानेर

Date-01.06.2024

किसानों के साथ नई तकनीक साझा करें कृषि वैज्ञानिक, साथ ही फिडबैक भी लें, किसान को कितना फायदा हुआ- डॉ ए.के.सिंह, कुलपति, चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर

स्थानीय आवश्यकता और राष्ट्रीय प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए रिसर्च करें कृषि वैज्ञानिक- डॉ प्रभात कुमार, हॉर्टिकल्चर कमीशनर, भारत सरकार

एसकेआरएयू में अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन

बीकानेर, 01 जून। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन किया गया। अनुसंधान निदेशालय द्वारा आईएबीएम सभागार में आयोजित इस बैठक के मुख्य अतिथि चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ ए.के.सिंह, विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के हॉर्टिकल्चर कमीशनर डॉ प्रभात कुमार, श्रीगंगानगर से आए प्रगतिशील किसान श्री प्रदीप सिंह और जैसलमेर से आए किसान श्री हाथी सिंह थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एसकेआरएयू कुलपति डॉ अरूण कुमार ने की।

चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ ए.के.सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि नई तकनीक किसानों के साथ साझा करें। लेकिन साथ ही ये भी देखें कि किसानों को फायदा कितना हुआ, उसका फीडबैक भी लें। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का भी प्रयोग करें। साथ ही कहा कि इस विश्वविद्यालय को 6 जिलों की कृषि आधारित आवश्यकताओं और किसानों की आय बढ़ाने की जिम्मेदारी दी गई है। उन्हें पूरी शिद्दत से निभाएं।

भारत सरकार के हॉर्टिकल्चर कमीशनर डॉ प्रभात कुमार ने कहा कि कृषि वैज्ञानिक स्थानीय आवश्यकता और राष्ट्रीय प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए रिसर्च करें। इको सिस्टम आधारित अनुसंधान महत्वपूर्ण है। साथ ही कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक कीचन गार्डन विकसित करें और उसे लोगों को बताएं। संयुक्त निदेशक कृषि श्री कैलाश चौधरी ने कहा कि बीकानेर जिले में किसान मूंगफली से बीटी कॉटन की ओर शिफ्ट हो रहे थे। लेकिन गुलाबी सुंडी की मार के चलते फिर से मूंगफली की ओर शिफ्ट हो रहे हैं। जो चिंता का विषय है।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में माहौल काफी सकारात्मक किया गया है। बेस्ट स्टूडेंट, बेस्ट साइंटिस्ट इत्यादि को पुरस्कृत किया जाता है। शिक्षकों को प्रमोशन दिए गए हैं। साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को लेकर कहा कि किसी आईआईटी से एमओयू होता है तो फसलों में बिमारी का शुरू में ही मालूम चल जाएगा। जिसका फायदा किसानों को होगा। नई तकनीक को केवीके के जरिए किसानों तक पहुंचाई जाएगी।

इससे पूर्व अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने स्वागत भाषण और अतिरिक्त निदेशक अनुसंधान डॉ योगेश शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में विभिन्न कृषि वैज्ञानिकों ने स्टूडेंट्स द्वारा किए गए अनुसंधानों का प्रजेंटेशन दिया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ बीडीएस नाथावत ने किया। समिति की बैठक में विश्वविद्यालय के सभी डीन, डायरेक्टर समेत हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू, जैसलमेर और झुंझुनूं से आए कृषि वैज्ञानिक भी शामिल हुए।